शिवलिंगरूप ही ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए)

डी.वी.डी. नं.380, वी.सी.डी. नं.2314, प्रातः क्लास- 05.11.66

प्रातः क्लास चल रहा था- 05.11.1966। शनिवार को तीसरे पेज के मध्यादि में बात चल रही थी कि सतयुग में भारत में ये आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था। उसको डीटी डिनायस्टी कहा जाता है। अभी वो राज्य कहाँ गया? वो देवताएँ तो 84 जन्म ले करके सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो; इन चार अवस्थाओं में तो आना ही पड़ता है; क्योंकि इस दुनिया में सदैव कोई चीज़ कायम तो रहती ही नहीं। ये ड्रामा है ना! तो ड्रामा चक्र तो ज़रूर लगाएगा। तो वही चीज़ कायम तो रह नहीं सकती है और मनुष्य को भी तो 84 जन्म लेने पड़ते हैं ना, सिर्फ 21 जन्म तो नहीं रहेगा। सारी आयु में, सारे इस कल्प में जन्म-मरण के चक्र में तो आना ही पड़ेगा।

तो बच्चों को बहुत समझाना है। मूल-ते-मूल बात ये है कि तुम बच्चों को भी यही ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत बताना है, जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त तुम बच्चों को भी याद रहेगा। तुमको भी याद रहेगा, जो ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन्त बाप के डायरैक्ट बच्चे हो और उन धर्मपिताओं के फॉलोअर्स को भी याद रहेगा, जो नम्बरवार धर्मपिताओं के बच्चे हैं। उनको याद नहीं रहता तो तुम भी भूल जाते हो। बाबा कहते हैं ना- योग में बच्चे बहुत कम हैं, बहुत कच्चे हैं। कब की बात बताई? सन् 1966 की बात बताई, जब ब्रह्मा बाबा जीवित थे। ब्रह्मा दादा लेखराज का टाइटिल 'चंद्रमा' है। तो चंद्रवंशी बच्चे भी जो प्रैक्टिकल में सामने थे और उस ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा की गोद में पलने वाले कुखवंशावली बच्चे भी सामने थे, प्रैक्टिकल में थे।

तो बोला- योग में बहुत कच्चे हैं। चाहे वो ब्रह्मा को फॉलो करने वाले पक्के चंद्रवंशी हों, चाहे ब्रह्मा की गोद में खेलने वाले और-2 नीची कुरियों के ब्राह्मण हों, सभी याद में बहुत कच्चे हैं। फिर भी ये बात बोलते कौन हैं कि बच्चे बहुत कच्चे हैं? निराकार आत्माओं का निराकार बाप तो बोल नहीं सकते। उनको तो मुख ही नहीं, इन्द्रियाँ ही नहीं। तो ये बात कौन बोलते हैं कि बच्चे बहुत कच्चे हैं? (किसी ने कहा- ब्रह्मा द्वारा शिव बाप बोलते हैं।) कच्चे हैं और पक्के हैं- ये बताने वाला कौन है? बेहद के बाप तो दो हैं। आत्माओं का भी बाप; आत्माएँ तो निराकार, आत्माओं का बाप भी निराकार, वो तो बोलते नहीं। क्यों नहीं बोलते? उनके अनुभव की तो ये बात नहीं कि कौन कच्चा है, कौन पक्का है। आत्माओं का बाप तो आत्माओं को समान रूप से देखेंगे या पहले से ही कच्चा-पक्का देखेंगे? (किसी ने कहा- समान रूप से) तो ये बोलते कौन हैं कि बच्चे बड़े कच्चे हैं? बाप बोलते हैं ना! क्या बोलते? ऐसे मत समझो, इनके लिए कोई वो कहते हैं। किनके लिए? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) इनके लिए नहीं बोलते हैं। नहीं, बोलता है- ये तो तुम बच्चे सबसे कच्चे हैं। कौन बच्चे? (किसी ने कहा- तुम बच्चे) 'तुम' किससे कहा? (किसी ने कहा- सम्मुख बैठने वाला) उस समय जब ब्रह्मा बाबा जीवित थे सन् 1966 में, तो सबसे कच्चे बच्चे कौन? कौन-से धर्मवंश के बच्चे सबसे कच्चे? अरे! अच्छा, याद में सबसे पक्के कौन बनते हैं? (किसी ने कहा-सूर्यवंशी) तो दादा लेखराज ब्रह्मा के सम्मुख जो बच्चे थे, वो तो और-2 वंश के हैं, प्रैक्टिकल में सूर्यवंशी तो नहीं थे। चंद्रवंशी, इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन्स- इन धर्मों में कन्वर्ट होने वाले सभी ब्राह्मण बच्चे उस समय थे, जो ब्रह्मा की गोद में खेलते थे। तो सबसे कच्चे किसको कहा? सूर्यवंशी बच्चे तो थे ही नहीं, जो सबसे पक्के भी बनते हैं और लास्ट में आकर कलियुग में सबसे कच्चे भी बनते हैं। तो 'तुम बच्चे' किससे कहा? तुम तो सामने वालों से कहा जाता है, इमर्ज करके बोलते थे कि तुम बच्चे सबसे कच्चे हैं।

तुम इनसे और ही पक्के हो। किनसे? ब्रह्मा से; क्योंकि इनके पास तो बहुत ही ये सभी हंगामा है- चिट्ठियाँ आदि पढ़ना, ये जवाब देना, ये सभी बातें, ये मकान बनाना चाहिए, ये सेण्टर बढ़ने चाहिए। ये सभी तो, ये पूछता तो सब इनसे है ना और

सारा फुर्ना तो इनके ऊपर ही रहता है ना! किनके ऊपर? अरे! साकार में ज़िम्मेवारी किसकी? ब्रह्मा के ऊपर। तुम बच्चों के ऊपर तो नहीं है ना! 'तुम बच्चे' किसको कहते हैं? (किसी ने कहा-सामने वाले) जो भी रुद्रमाला के बच्चे हैं, उन सबसे कहते कि तुम बच्चों के ऊपर तो ये सारी ज़िम्मेवारियाँ नहीं हैं कि ये ढेर हंगामे हो रहे हैं, चिट्ठियाँ आदि आती हैं उनका जवाब देना है, ये जवाब देना है, ऐसे देना है, ये सभी बातें, ये मकान आदि बनाना चाहिए। ये मकान आदि बनाने का भी तुमको कोई फुर्ना नहीं है। इनके ऊपर तो बहुत फुर्ना रहता है। इनके ऊपर क्यों? इनके माने ब्रह्मा के ऊपर क्यों? तुम्हारे ऊपर क्यों नहीं? क्योंकि तुम रुद्र के बच्चे हो। किसके बच्चे? रौद्र रूप धारण करने वाले के बच्चे। सौम्य रूप धारण करने वाले ब्रह्मा के बच्चे तुम नहीं हो। रौद्र रूप धारण करने वाला माना भयंकर रूप धारण करने वाला। इतना भंयकर कि सारी सृष्टि के प्राणीमात्र को भस्म करने वाला। करता है या नहीं करता है? (किसी ने कहा- करता है) तो उसके बच्चे भी कैसे होंगे? उन बच्चों में भी कैसा खून होगा? जैसा बाप का खून वैसा बच्चे का खून।

तो मकान आदि बनाना, स्थापना करना, निर्माण करना- ये तुम बच्चों का काम है या इन ब्रह्मा का काम है? ब्रह्मा द्वारा स्थापना गाई हुई है और शंकर द्वारा विनाश गाया हुआ है। इस रुद्र-ज्ञान-यज्ञ में सारी दुनियाँ स्वाहा होनी है। किसका ज्ञान-यज्ञ है? रौद्र रूप धारण करने वाले का ज्ञान-यज्ञ। ये रौद्र रूप रुद्र धारण करते हैं, रुद्र के साथ-2 रुद्र के बच्चे भी धारण करते हैं। ये विनाशकारी हैं, इनका मुख्य काम विनाश करना है या स्थापना करना है? विनाश करना है। स्थापना करना इन ब्रह्मा का काम है। तुम बच्चों के ऊपर तो नई दुनिया की स्थापना करने का काम नहीं है ना! तुम बच्चे नई दुनिया की स्थापना क्यों नहीं कर सकते? ये ब्रह्मा क्यों कर सकते? ब्रह्मा के पक्के बच्चे होने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारी, पक्के चंद्रवंशी क्यों स्थापना कर सकते, तुम क्यों नहीं कर सकते? (किसी ने कहा-अपवित्रता से लंगड़े) हाँ, तुम हो बाप के बच्चे। बच्चे हो ना, बच्चियाँ तो नहीं हो ना! बच्चे किसको फॉलो करते? बाप को फॉलो करते। और बच्चियाँ? माँ को फॉलो करतीं। तो वो हैं ब्रह्माकुमारियाँ/अम्माकुमारियाँ और तुम हो प्रजापिता के बच्चे। तुम बच्चों के ऊपर नई दुनिया की स्थापना की ज़िम्मेवारी नहीं है; क्योंकि तुम जन्म-जन्मांतर के पुरुष स्वभाव-संस्कार धारण करने वाले हो या स्त्री स्वभाव धारण करने वाले हो? तुम्हारी आत्मा में जन्म-जन्मांतर के पुरुष स्वभाव के संस्कार हैं। बाबा क्या कहते- पुरुष सब क्या हैं? पुरुष सब दुर्योधन-दुःशासन हैं। ''सभी दुःशासन अथवा दुर्योधन हैं। द्रौपदियों के चीर सभी हरते हैं।'' (मु.ता.19.7.73 पृ.2 आदि) तो जो दुर्योधन-दुःशासन हैं, वो विकारी हुए या शीतल चंद्रमा और चंद्रमा को फॉलो करने वाले चंद्रवंशी विकारी हुए? (किसी ने कहा- सूर्यवंशी ज़्यादा विकारी हुए) तो जो ज़्यादा विकारी होते हैं, वो विनाश कराने के निमित्त बनते हैं या जो निर्विकारी बच्चियाँ हैं, वो विनाश कराने के निमित्त बनती हैं? (किसी ने कहा- ज़्यादा विकारी विनाश के निमित्त) स्वर्ग का गेट खोलने की ज़िम्मेवारी किनको देते हैं? कन्याओं-माताओं को देते। क्यों? क्योंकि कन्याओं-माताओं के लिए तो नहीं बोला- सब सूपनखा-पूतना हैं। पुरुषों के लिए क्या बोल दिया? ए टू जैड सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं, 500-700 करोड़वाँ मनुष्य होगा, पुरुष होगा और पहले नम्बर वाला होगा- देवताओं से भी आदिदेव, उसका भी चोला क्या है? पुरुष है।

तो तुम बच्चों का काम स्थापना का है ही नहीं, तुम्हें तो विनाश कराना है और विनाश होता ही है अपवित्रता से। वो तो गाया जाता है ना कि जिनके मत्थे मामला से के योगी बनें! बाप को कैसे याद कर सकें! योग की पावर सब प्रकार की ताकत देती है। अच्छे-से-अच्छी ताकत भी देती है; देव-आत्माएँ अच्छे-ते-अच्छी बनती हैं और योग की पावर बुरे-से-बुरी ताकत भी देती है, जिसे कहते हैं- राक्षसी ताकत। तो जिनका जो काम, उस काम को पूरा करने के लिए जो योग की पावर धारण करते हैं, वैसा काम करने में सफल होते हैं।

अब बाप को कैसे याद कर सकें? बताओ। कौन-से बाप की बात है? बिन्दी-2 आत्माओं के बाप, ज्योतिबिंदु की बात है? वो प्यार का सागर है या मार का सागर है? (किसी ने कहा-प्यार का सागर है) प्यार से होती है स्थापना। माताएँ बच्चों को

प्यार से पाल सकती हैं, पुरुष तो वो पालना नहीं दे सकते; क्योंकि पुरुषों में वो प्यार नहीं होता है जो माताओं-कन्याओं में होता है। तो बताओ, वो बाप कौन-सा है जिसको याद करने से ताकत मिलती है, अच्छे-से-अच्छी ताकत भी मिलती है और खराब-से-खराब कर्म करने की भी ताकत मिलती है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) जो इस सृष्टि पर सदा कायम है, वो शिवबाबा? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) ओहो! राम वाली आत्मा के लिए तो बीस बार कह दिया- शास्त्रों में जिस राम का गायन है वो राम तो फेल हो गया। ''बाप समझाते हैं ऐसे नहीं कहेंगे रामचन्द्र फेल हुआ। नहीं। कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर भविष्य में रामचन्द्र बनते हैं। राम वा सीता त्रेता में थोड़े ही पढ़ते हैं जो कहें फेल हुए। यह भी समझ की बात है ना। कोई सुने रामचन्द्र फेल हुआ तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है।'' (मु.ता.9.8.70 पृ.1 मध्यादि) मुरली में तो बोलते हैं- वो त्रेता वाला राम नहीं। ''कहते हैं बाबा हम कल्प-2 आपसे मिले हैं। कल्प पहले भी मिले थे। बाबा आपको ही राम कहते हैं। राम त्रेता वाला नहीं। उनको तो सिर्फ उनका बच्चा ही बाबा कहेगा। यह तो है बेहद का बाप।'' (मु.ता.18.12.76 पृ.2 आदि) तो किसकी बात है? (किसी ने कहा- संगमयुग में) संगमयुग में वो सीता वाला राम है क्या, जिसकी सीता को ही रावण ले गया? वो शक्ति का भंडार है? (किसी ने कहा- नहीं है) वो कौन है जो शक्ति का भंडार है, अखूट भंडार है? एक है ज्ञान का भंडार; क्योंकि जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता है; इसलिए तीनों कालों का ज्ञान भरा हुआ है। अखूट ज्ञान का भंडार, सारा ही कोई ले ले तो भी सारा ही बचता है, खूटता ही नहीं। वो कौन? शिवबाप। फिर योग का भण्डार कौन? (किसी ने कहा- ज्ञान-योग दोनों का भंडार) शिवबाबा या शिवबाप? शिवबाबा कहें तो साकार-निराकार का मेल और शिवबाप कहें तो जिससे बड़ा बाप, सुप्रीम फ़ादर कोई होता ही नहीं। वो हुआ निराकार आत्माओं का बाप- शिवबाप। तो शिवबाप को ज्ञान का भंडार कहें या योगशक्ति का भण्डार कहें? (किसी ने कहा- ज्ञान का भंडार) योगशक्ति का भंडार नहीं? (किसी ने कहा- दोनों का) योग लगाने की उसको दरकार है? (किसी ने कहा-साकार की दरकार है) साकार की दरकार है; लेकिन क्या वो साकारों से योग लगाता है? वो स्वस्थिति में स्थित रहता है या साकार शरीरधारियों से योग लगाता है? सदा स्वस्थिति में रहता है; इसलिए स्वधर्म की स्थापना करता है। जो धर्मपिताएँ सदा स्वस्थिति में नहीं रहते हैं, संग के रंग से देहभान में आ जाते हैं, तो वो तो स्वर्ग नहीं स्थापन कर पाते, चाहे ब्रह्मा ही क्यों न हो। कर पाते हैं? नहीं। तो शिव के लिए तो यही कहेंगे कि वो सदैव स्वस्थिति में रहने वाला है। जो सदैव स्वस्थिति में रहने वाला है, उसको योग लगाने की कोई दरकार नहीं है। फिर कौन है? (किसी ने कहा-प्रजापिता) हाँ! जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है, जो सबसे जास्ती पतित बन जाता है, सबसे जास्ती योग में कच्ची आत्मा बन जाती है, उस आत्मा को जब निराकार आत्माओं का बाप मिल जाता है, पहचान मिल जाती है, तो फिर वो याद में सबसे तीखा जाता है। उसकी यादगार क्या है? शिवलिंग उसकी यादगार है, जो शिवलिंग 'अव्यक्तमूर्ति' कहा जाता है। (गीता 9/4) अव्यक्त भी है; क्योंकि नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव आदि साकार इन्द्रियाँ नहीं हैं और व्यक्त/साकार भी है। व्यक्त माने आँखों से देखने योग्य। तो लिंग को तो आँखों से देखा जा सकता है, बड़ा है और बिंदु तो छोटे-से-छोटा होता है, उस सूक्ष्म अणोरणीयासम् ज्योतिबिन्दु को देखा ही नहीं जा सकता। इसलिए वो सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु की याद में रहने से अव्यक्त भी है और उसको अपना शरीर भी है। शरीर तो है; नहीं तो लिंग क्यों दिखाया जाता! जो कहता है कि मेरे तो लिंग की ही पूजा होती है। और देवताओं की सभी इन्द्रियों की पूजा होती है, लिंग की पूजा नहीं होती। ''मेरी तो सिर्फ आत्मा माना लिंग की ही पूजा होती है। तुम्हारी तो सालिग्रामों के रूप में, फिर देवताओं के रूप में भी पूजा होती है।'' (मु.ता.22.7.67 पृ.3 अंत) तो शिवबाप तो कहते हैं-''न मैं पुजारी बनता हूँ, न मैं पूज्य बनता हूँ।'' (मु.ता.22.5.71 पृ.2 मध्यांत) जो निराकार आत्माओं का बाप है, वो पूज्य और पुजारी बनता है? वो तो बनता ही नहीं। तो ये शिवलिंग जो दिखाया गया है, जिसकी पूजा की जाती है और बाप कहते हैं- अपने ही रूप की बनाकर पूजा करते हैं। जो देवताएँ हैं, पूज्य थे, फिर पुजारी बनते हैं। तो शिवलिंग भी क्या हुआ? उस लिंग-रूप निराकारी स्टेज में स्थिर होने से पहले जब पुरुषार्थी रूप था, याद में बैठे हुए दिखाया जाता है; शंकर को किस रूप में दिखाते हैं? याद में बैठा हुआ है।

याद में बैठा हुआ है इसका मतलब अपूर्ण पुरुषार्थी है या सम्पूर्ण पुरुषार्थी है? अपूर्ण पुरुषार्थी है। तो जो अपूर्ण पुरुषार्थी है, वो सम्पूर्ण पुरुषार्थी बनने के लिए याद में बैठा हुआ है। याद में बैठना ये साबित करता है कि वो अपूर्ण आत्मा है, अपने से किसी ऊँचे को याद करता है।

तो बताया कि स्थापना का सारा फुर्ना इन ब्रह्मा के ऊपर रहता है। तुम बच्चों के ऊपर ये स्थापना का फुर्ना नहीं है। ये बच्चे भी ऐसे ही कहते हैं ना- बाबा! क्या करें, ऑफ़िस में जाते हैं, याद नहीं कर सकते। ऑफ़िस में जाते हैं तो ऑफ़िस में जो बैठे हुए हैं, उनका संग का रंग लग जाता है। हम ये धंधा करते हैं, तो वो धंधा करते-2 याद में रहना भूल जाते हैं। अच्छा, तुम्हारा धंधा तो कुछ भी नहीं है, छोटा-मोटा धंधा है और ब्रह्मा का तो नई दुनिया स्थापन करने का धंधा है ना! इनका तो बड़ा धंधा है। इनके ऊपर तो बड़े धंधे की ज़िम्मेवारी है। कौन-से धंधे की ज़िम्मेवारी? नई दुनिया की स्थापना की ज़िम्मेवारी है। ये-2 करना है, फलाना करना है- ये सारा दिन यही ख़्याल इनकी बुद्धि में रहता है। ये चित्र बने हुए हैं साक्षात्कार से, बाबा ने बनवाए। इनको कैसे समझाया जाए, बच्चों को इन चित्रों में समझाने के लिए कैसे एक्सपर्ट बनाया जाए। बाहर की दुनिया में इन चित्रों को समझाने जाते हैं तो लोग कितने अपोज़िशन करते हैं, कितनी आफ़तें आती हैं, चित्रों को ही फाड़ देते हैं, कितनी खिटपिट होती हैं! तो बुद्धि में आता है- ये करो, वो करो। फिर बच्चे परेशान होते हैं तो बाबा को ही लिखते रहते हैं- बाबा! इन चित्रों को समझाने में ये आफतें आती हैं।

तो बाबा को तो बहुत ही विचार चलता है ना! बाबा को भी बहुत टाइम मिलता है। तो बाबा बोलते हैं- भई! हमें तो टाइम मिलता है। सुबह को बहुत मज़ा आता है, बाबा को जास्ती आता है। हाँ, ये बच्ची से पूछो। हमारी बच्ची कौन है, ये बच्ची है ना! ये रहती है ना हमारे पास। वो जानती है कि मैं कै बजे उठता हूँ। नज़दीक में रहने वाली बच्ची जानेगी या दूर में रहने वाली? (किसी ने कहा-नज़दीक रहने वाली) घंटी बजती है, उस घंटी बजने से भी पहले हम जाग करके या तो बैठ जाता हूँ या तो पड़े-2 सोए भी याद करता हूँ; क्योंकि वो शरीर तो बड़ा है ना! कौन-सा शरीर? ब्रह्मा बाबा का शरीर तो बड़ा है ना! तो थक जाता हूँ। देहभान रहता है तो थक जाता हूँ। थक जाता हूँ तो फिर सो जाता हूँ। थकान होती है तो सो जाता हूँ। फिर कह देता हूँ- बाबा! और नशा भी चढ़ा जाता है- बस, अभी इस हयाती के पीछे मैं महाराजकुमार, विश्व का महाराजकुमार बनूँगा, फिर से बनूँगा। ओहोऽऽ! बड़ा वंडर है! परंतु विश्व का महाराजकुमार बनने के लिए मुझे याद तो ज़रूर करना पड़े और सबसे जास्ती याद करना पड़े, ऐसे मुफ़्त में तो नहीं बन जाऊँगा। ये अपने से बात करता रहता हूँ। पर जैसे मैं बात करता हूँ, ऐसे-2 तुमको भी बात करनी है; क्योंकि पढ़ाई तो जैसे तुम पढ़ते हो, वैसे बाबा भी पढ़ते हैं। कौन बाबा? ब्रह्मा बाबा भी पढ़ते हैं। सबके लिए ये पढ़ाई है ना! याद करो और समझाओ बच्चों को। ये 84 का चक्र समझाओ, सो देखो, ये 84 का चक्र समझाय तो रहे हैं ना! पीछे बाप कहते हैं, ये कहते हैं। ये अनुभव बताते हैं ना बैठ करके कि बच्ची! जो कुछ भी फ़ायदा है, कल्याण है, और सब बातें कोई भी कहे, बोलो- इन सब बातों से कोई फ़ायदा नहीं है, दुनिया भर की, दुनियादारी की बातें बताते रहते हो।

05.11.1966 की वाणी का चौथा पेज- तो किस बात से फ़ायदा है? बाप का परिचय देने से फ़ायदा है। क्यों? बाप का परिचय देने से क्या फ़ायदा? (किसी ने कहा-जन्म-जन्मांतर भाग्य बन जाएगा) क्यों, जो लौकिक बाप है, उसके बच्चे बनने से भाग्य नहीं बनता? अल्पकाल के लिए बहुत-2 एक जन्म का बनता है और बेहद के बाप को याद करने से बेहद का वर्सा, 84 जन्मों का हिसाब बनता है; लेकिन बेहद के बाप तो दो हैं। कौन? आत्माओं का बाप और मनुष्यों का बाप।

तो बाप का परिचय देना- ये बात तो सही है। क्यों सही है? क्योंकि बाप से वर्सा मिलता है। लेकिन निराकार आत्माओं के निराकार बाप से निराकारी वर्सा चाहिए क्या? साकार जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है या निराकार जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है? (किसी ने कहा-निराकार जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है।) तो त्रिकालदर्शी ज्ञानी कौन है? (किसी ने कहा-शिवबाप) तो जो शिवबाप त्रिकालदर्शी है, वो जन्म-जन्मांतर तो क्या सदाकाल निराकारी है; इसलिए त्रिकालदर्शी है। तो त्रिकालदर्शी से क्या

वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा- मुक्ति का वर्सा) निराकार से मुक्ति का वर्सा मिलेगा! (किसी ने कहा- साकार-निराकार के मेल से जीवन्मुक्ति) अरे, निराकार ज्ञान का भंडार है, त्रिकालदर्शी है तो निराकार से निराकारी ज्ञान का वर्सा मिलेगा या साकारी मिलेगा? डॉक्टर से डॉक्टरी का वर्सा मिलेगा। बाप डॉक्टर होगा तो बच्चे को डॉक्टरी के कुछ-न-कुछ गुरगे सिखाय देगा; बाप मल्टीमिलियनायर होगा तो बच्चा मल्टीमिलियन का वर्सा लेने वाला बनेगा; बाप बड़ा ज़मींदार होगा तो बच्चे को ज़मीन-जायदाद का वर्सा मिलेगा। बाप होगा तब तो वर्सा मिलेगा। अरे! बाप के पास जिस तरीके का, जिस क़द्र का वर्सा होगा वैसा ही बच्चे को वर्सा मिलेगा ना! कि दूसरा मिलेगा? (किसी ने कहा- वैसा ही मिलेगा) निराकार आत्माओं के निराकार बाप के पास कौन-सा वर्सा है? (किसी ने कहा- ज्ञान का वर्सा) तो ज्ञान का ही वर्सा देगा ना! उसके पास स्वर्ग का वर्सा है? अरे, वो खुद स्वर्ग में रहता है? (किसी ने कहा-नहीं रहता) फिर? तुमको कहाँ से देगा? अरे! (किसी ने कहा-साकार के द्वारा देगा ना!) साकार तो पतित है। हाँ, साकार जब निराकार की याद करते-2 निराकारी बन जाए, ऐसा निराकारी बन जाए कि शरीर भी रहे, बड़ा आकार लिंग-रूप भी रहे और उसमें मन-बुद्धि रूपी जो आत्मा है, वो निराकारी स्टेज वाली भी बनी रहे, बिंदु-रूप स्टेज में बनी रहे माना शिवलिंग रूप बन जाए। उसमें ज्योतिबिंदु शिव का रूप भी है। कैसे बना- याद की प्रैक्टिस से बना या आत्माओं के बाप शिव ने बना दिया? (किसी ने कहा-याद के प्रैक्टिस से) अगर शिव बनाने वाला होता तो 500-700 करोड़ को बना देता। शिव, आत्माओं का बाप पक्षपाती/पार्शियल है? नहीं। तो ये हिसाब बना हुआ है कि वो आ करके सिर्फ ज्ञान देता है। क्या ज्ञान देता है? बताया- हम यहाँ देते ही हैं परिचय ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत का। यहाँ माने इस दुनिया में। किसका परिचय देते हैं? जो परिचय 84 जन्मों में न देवताएँ जानते थे, न 63 जन्मों में मनुष्य और असुर जानते हैं। किसका परिचय? इस मनुष्य-सृष्टि का हीरो पार्टधारी कौन है, जो इस मनुष्य-सृष्टि में ही 84 जन्म पार्ट बजाता है। वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है इस दुनिया में; कि आत्माओं का बाप इस दुनिया में ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है? (किसी ने कहा- निराकार को ऊँच-नीच नहीं कहेंगे) हाँ, ऊँच और नीच इस दुनिया की बात होती है, परमधाम की बात नहीं है।

तो हम यहाँ देते ही हैं परिचय ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत का। अभी कई दिनों से त्रिमूर्ति के चित्र के ऊपर बाबा बताय रहे हैं कि त्रिमूर्ति के चित्र में वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कौन है, कौन-सी मूर्ति है? (किसी ने कहा-शंकर) शंकर तो याद में बैठा हुआ है। शंकर तो पुरुषार्थी है। याद करने का पुरुषार्थ करता है कि नहीं? (किसी ने कहा-करता है) तो वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत हुआ? (किसी ने कहा- नहीं) जो खुद ही पुरुषार्थी है=‘पुरुष’ माने ‘आत्मा’, ‘अर्थ’ माने ‘लिए’, आत्मा के कल्याण के लिए याद कर रहा है। तो इससे साबित होता है, उसकी आत्मा का कल्याण नहीं हुआ ना, तब ही तो शंकर याद में बैठा है। तो शंकर ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है? (किसी ने कहा- शंकर सम्पन्न स्टेज के...) तो ये कहो ना कि शंकर वाली आत्मा जब याद करते-2 सम्पन्न स्टेज में पहुँच जाएगी, तो उसे याद करने की दरकार नहीं रहेगी, शिव समान बन जाती है और शिव बाप भी ब्रह्मा द्वारा यही कहते हैं- ‘‘तुम बच्चों को आप समान बनाकर साथ ले जाते हैं।’’ (मु.ता.10.9.73 पृ.3 मध्य) तो कोई-न-कोई तो अव्वल नम्बर में बाप शिव समान बनता होगा ना! तो जो बनता है उसी यादगार जड़ रूप की पूजा मंदिरों में होती है। कौन-से मंदिरों में? शिवलिंग के मंदिरों में, जो मंदिर दुनिया में सबसे जास्ती तादाद में पाए जाते हैं। दुनिया में देश-विदेशों में जितनी भी खुदाइयाँ हुई हैं, उन खुदाइयों में सबसे जास्ती वो शिवलिंग की मूर्तियाँ मिली हैं। वो मूर्ति भी है-मूर्त माने साकार; अमूर्त माने निराकार-वो मूर्ति भी है और अमूर्त भी है; क्योंकि ज्योतिबिन्दु की याद में टिकी हुई है।

उसका परिचय हम देते हैं जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत इस दुनियाँ में गाया हुआ है। उनसे वर्सा मिलता है। क्या कहा? निराकार बाप शिव ज्योतिबिन्दु निराकार आत्माओं का बाप है ना! तो जो धर्मपिताएँ इस दुनिया में निराकार की याद करने वाले हैं, साकार को पहचान ही नहीं पाते, तो उनको शांतिधाम का निराकारी शांति का वर्सा मिलेगा या सुखधाम का वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा- निराकारी शांतिधाम) तो वो दीर्घकालीन निराकारी धाम में पड़े रहते हैं। निराकार से कौन-सा वर्सा मिलता है?

निराकारी वर्सा मिलता है। जो साकार को, बेहद के बाप को पहचाने; साकार में बेहद का बाप कौन? प्रजापिता। सारे मनुष्यमात्र, जो भी सब धर्मों की प्रजा है, सबका बाप, सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप, बीज। बीज, बाप को कहा जाता है। सारी ही मनुष्य-सृष्टि वृक्ष का बाप। तो हम उस बेहद के साकार बाप का परिचय देते हैं। उनसे ही वर्सा मिलता है।

उनसे ही वर्सा मिलता है- किसने बोला? शिवबाप ने बोला ब्रह्मा के मुख से। 'उनसे' किसके लिए बोला? (किसी ने कहा-प्रजापिता) हाँ, जो भविष्य में सारे संसार के बीच नं. वार प्रत्यक्ष होने वाला पार्ट है। जिसके लिए मुरली में घोषणा कर दी थी- ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (रिवाइज़ मु.ता.4.3.70 पृ.3 मध्य) ये लक्ष्मी-नारायण जो डायरैक्ट नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हैं, ये मनुष्य-सृष्टि के बीज हैं। उनसे वर्सा मिलता है। 'उनसे' एक के लिए कहा या दो के लिए कहा? 'उनसे' दो के लिए कहा। 'उससे' वर्सा मिलता है तो एक के लिए बात होती।

ये जब, भारत में भी शिवजयंती मनाते हैं, तो आते हैं, तो कुछ तो वर्सा ऊँचे-ते-ऊँचा, ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा देते ही हैं ना! ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा कौन-सा है? (किसी ने कहा- सुखधाम) ये ऊँचे-ते-ऊँचा विश्व का मालिक बनाने का वर्सा है। बनाने का वर्सा है या बनने का वर्सा है? (किसी ने कहा-बनाने का) बनाने का क्यों? (किसी ने कहा-शिवबाप बनाते हैं ना!) शिवबाप खुद ज़मीन-जायदाद का, विश्व के मालिकपने का मालिक है? (किसी ने कहा- नहीं) वो मालिक बनता है? (किसी ने कहा- नहीं) फिर? "जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं।" (मु.ता.12.1.78 पृ.2 अंत) जैसे जवाहरलाल नेहरु इलाहाबाद में पैदा हुए, तो इलाहाबाद के लोग नेहरु जी को बहुत मानते थे। जब भी चुनाव होता था तो वो इलाहाबाद से चुनावी लड़ाई लड़ते थे और वहाँ से जीत जाते थे। तो ऐसे ही बताया- विश्व का मालिक तो साकार होगा ना! तो जो स्वयं मालिक होगा; हमारे भारतीय शास्त्रों में विश्व का मालिक कौन गाया हुआ है? (किसी ने कहा-नारायण) नारायण को सतयुग का मालिक बताते हैं। सतयुग में नारायण का राज्य था, राधा-कृष्ण का बाप बना- नर नारायण, नारी से लक्ष्मी। तो जो विश्व का मालिक गाया हुआ है, कैसे? ''हर-2 महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे।'' वो मालिक गाया हुआ है, विश्व का राजा है ना! तो राजाईपने का ताज है? उसको ताज होता है? (किसी ने कहा-नहीं) पार्वती को फिर भी ताज होता है और शंकर को तो ज़िम्मेवारी का ताज है ही नहीं। वो बच्चों को विश्व का मालिकाना बाँट देता है; इसलिए शिव की अष्ट-मूर्तियाँ गाई जाती हैं, जो अष्ट दिग्पाल हैं, आठ दिशाओं को पालने वाले। चार मुख्य दिशाएँ और चार उनके कोने (कॉर्नर)। कितने हुए? (किसी ने कहा-आठ) आठ दिग्पाल, आठ दिशाओं को पालने वाले। माने आठ दिशाओं के पालने वाले, आठ धर्मखण्डों के मुखिया। तो विश्व का मालिक बनाने का वर्सा देता है। खुद लेता है? खुद नहीं लेता। मालिकपने का वर्सा देता है या लेता है? देता है। फिर भी विश्व का मालिक गाया जाता है। गाया जाता है; लेकिन होता तो, फ़कीर होता है या मालिक होता है? फ़कीर के रूप में दिखाते हैं।

तो बताया- ये लक्ष्मी-नारायण देवी-देवताएँ; क्योंकि ये जो आर्यसमाजी हैं ना बच्ची, वो देवी-देवताओं को नहीं मानते। क्यों नहीं मानते? (किसी ने कहा-आधे नास्तिक हैं ना!) आधे नास्तिक क्यों बन गए? क्योंकि उनको तो विश्व की बादशाही का वर्सा मिलता ही नहीं। एक छोटे-2 एरिया के एम.पी. बन जाते हैं, एम.एल.ए. बन जाते हैं, ये बन जाएँगे, वो बन जाएँगे, विश्व का मालिकपना तो नहीं होता, तो मानेंगे क्यों! जब उनको मिलता ही नहीं, तो मानेंगे? नहीं मानते। जैसे मुसलमान अपने बाप को नहीं मानते ना! औरंगज़ेब अपने बाप को मानता था? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों नहीं मानता था? क्योंकि उसके बाप शाहजहाँ ने बड़े बच्चे दाराशिको को राजाई दे दी। शाह+जहाँ पंचमुखी महादेव को चार बच्चे थे। बड़े बच्चे को राजाई दे दी, औरंगज़ेब को राजाई नहीं मिली। तो वो बाप को मानता था? नहीं मानता था। जैसे ये मुसलमान नहीं मानते हैं ना देवों और महादेव शिवशंकर के चित्रों को। मुसलमान मूर्तियों को मानते हैं कि भारत में आ करके मूर्तियों का खंडन कर दिया? हिस्ट्री क्या कहती है? खंडन कर दिया। ऐसे वो आर्यसमाजी भी देवताओं के चित्रों/मूर्तियों को मानने वाले नहीं हैं। तो वो जात एक ही है जैसे। जैसे मुसलमानों की जात, वैसे देवताओं के चित्रों को न मानने वालों आर्यसमाजियों की जात। उन यवनों और कौरवों का ही झगड़ा

लगता है भारत में। वो आर्यसमाजी इन चित्रों को फाड़ देते हैं, झगड़ा करते हैं और फिर ये भी बात है, जो मुसलमान हैं, जिनको यवन कहा जाता है और ये जो कांग्रेसी आर्यसमाजी हैं, इनका ही झगड़ा लगता है महामृत्यु के समय महाभारत में। दोनों का झगड़ा लगता है। तो देखो, आपस में भी उनका झगड़ा लगता है। तो ये भी, तुम भी तो यही बताते हो।

देखो, ये चित्र किसने रखा है? ये जो चार चित्र हैं, उनमें से ख़ास चित्र त्रिमूर्ति का है, ये किसने रखा है? तुम बताते हो- शिवबाबा ने साक्षात्कार से बनाया रखने के लिए, तो हम रखते हैं। ब्रह्मा के द्वारा डायरैक्शन दिया। तो वो चित्र देखते हैं ना! सो वो तो है ही जैसे वो मज़हबी पागलपन। जैसे मुसलमानों में मज़हबी पागलपन है, धर्म का जुनून है। बोलते हैं- ये क्या रखा है, वो क्या रखा है, ये कौन है, ये कहाँ से आया, क्या करता है? अरे! पर यहाँ तुम आ करके समझो तो, वो ही तो हम समझाते हैं यहाँ चित्रों पर- ये क्यों रखा है? ये कौन है? तो वो जैसे बाबा कहते हैं ना- इन बातों को संन्यासी नहीं समझते हैं। कौन नहीं समझेंगे? 'सम्' माने सम्पूर्ण, 'न्यासी' माने त्यागी। जो घर-गृहस्थ को, धंधे-धोरी को पूरा त्याग देते हैं, कांटों के जंगल में चले जाते हैं, वो संन्यासी नहीं समझ सकेंगे, वो घर-गृहस्थ में रहने के पक्के नहीं हैं। पत्नी के साथ जीवनभर रहते हैं? नहीं रहते हैं। उनको समझाना फ़ालतू है; क्योंकि हमारा ये जो धर्म है, वो प्रवृत्तिमार्ग का है या निवृत्तिमार्ग का है? हमारा तो प्रवृत्तिमार्ग का धर्म है। हमारे तो मुखिया अव्वल नम्बर के हैं ही लक्ष्मी-नारायण, शंकर-पार्वती। तो उनको ये चित्र समझाना फ़ालतू है। अभी वो तो भक्त हैं ही नहीं ना! कौन? लक्ष्मी-नारायण। ये मुसलमान भी देवी-देवताओं के भक्त नहीं हैं। वो तो और भी(ही) ये खंडन करने वाले हैं देवताओं को, इनकी मूर्तियों को खंडन करते हैं। उनसे बात करने की भी दरकार नहीं है। किनसे? मुसलमानों से बात करने की भी दरकार नहीं है और आर्यसमाजियों से भी बात करने की दरकार नहीं है। समझा ना! भले समझते तो हैं। कोई आर्यसमाजी भी आ करके समझते हैं; परन्तु वो जो आर्यसमाजी होगा, जो समझने वाला आर्यसमाजी होगा, वो ऐसे आ करके बकवास नहीं करेंगे। वो आ करके अपना वर्सा लेना होगा तो शांति से सुन करके और बुद्धि में धारण करने वाला होगा तो आ जाएगा उनकी बुद्धि में; क्योंकि सब धर्म वाले सुनते तो रहते ही हैं ना! इनमें जो-2 भी होगा, किनमें? जो भी सब आ करके, सारी दुनियाँ के लोग समझेंगे तो ना! आज नहीं तो कल समझेंगे। तो इन सब धर्म वालों में जो-2 भी होगा अपना देवी-देवता धर्म वाला, वही आ करके अपना वर्सा लेगा। डिसकस कोई करे तो बोलो- नहीं, हम तो कहते ही हैं एक बात।

हम एक ही बात कहते हैं। 'इसकी', किसकी तरफ़ इशारा किया? ब्रह्मा की ओर। हम कहते ही हैं इसकी बात। ब्रह्मा के लिए क्यों कहते हैं? हम कहते हैं ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत, ब्रह्मा के द्वारा परिचय देते हैं कि वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कौन है। हम ये थोड़े ही कहते हैं कि ऊँचे-ते-ऊँचा ब्रह्मा। ब्रह्मा के द्वारा बताते हैं कि ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कौन है। हम ये भी नहीं कहते कि ऊँचे-ते-ऊँचा शंकर। अगर शंकर ऊँचे-ते-ऊँचा होता तो दुनिया में शंकर की मूर्तियाँ सबसे जास्ती मिलनी चाहिए; लेकिन सबसे जास्ती तो लिंग-मूर्तियाँ मिली हैं। तो सार्वभौम, सारी दुनियाँ की बुद्धि में बैठने वाली मूर्ति तो वो निराकार अव्यक्त-मूर्ति शिव की है- 'शिवलिंग'। तो हम नहीं कहते कि ऊँचे-ते-ऊँचा ब्रह्मा या ऊँचे-ते-ऊँचा शंकर या ऊँचे-ते-ऊँचा फ़लाना। नहीं, हम तो कहते ही हैं ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत, जो इस दुनिया में ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाता है। इस संगम में भी ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाता है और 84 जन्मों में भी ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाता है। जो ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाने वाला होगा, वो कभी किसी से किसी जन्म में हार खाएगा क्या? नहीं खाएगा। देखो, हिस्ट्री में अकबर को महान बता दिया- अक़बर महान। फिर क्या हुआ? हिस्ट्री क्या कहती है? अक़बर ने इतने बड़े भारत में, इतने एरिया में राज्य किया, तो कोई सामना करने वाला ऐसा हुआ उसके सामने, जिसको उसने जीत ही नहीं पाया? कौन हुआ? महाराणा प्रताप हुआ ना! ऐसे ही शिवाजी हुआ। ये तो देहभान के आधार पर, हिंसक युद्ध के आधार पर नहीं जीत सके; लेकिन ज्ञान की बातों में भी, होशियारी की बातों में भी, आध्यात्मिक ज्ञान के हिसाब से भी जो इस दुनिया में आ करके ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाता है, व्यास के रूप में ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाता है। गीता में लिखा है- ''व्यासः प्रसादात्।''(गीता-18/75) व्यास की प्रसन्नता से ये गीता-ज्ञान मिला। द्वापर में वाल्मीक ने 'वाल्मीकि रामायण'

लिखी, कलियुग में तुलसीदास ने 'तुलसीकृत रामायण' लिखी। तो साहित्य के क्षेत्र में भी ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाने वाला हुआ। तो जो ऊँचे-ते-ऊँचा हीरो पार्टधारी भगवंत है, हम उसका परिचय देते हैं।

ऊँचे-ते-ऊँचा बाप, उनसे (दो हैं) वर्सा मिलना है। किसने बोला? ये बोलने वाला कौन है? शिवबाबा की आत्मा बोलती है। क्या बोलती है? जो ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है उनसे (दो से) वर्सा मिलना है, मेरे (1) से नहीं। क्या कहा? वर्सा किससे मिलना है? (किसी ने कहा- साकार सो निराकार से) हाँ, उनसे वर्सा मिलना है। कौन-सा वर्सा- साकार वर्सा या निराकार ज्ञान का वर्सा? साकार वर्सा उनसे मिलना है। स्वर्ग साकार है या निराकार? स्वर्ग साकार है। तो स्वर्ग का वर्सा देने वाला साकारी बाप होगा ना! वो साकार होगा या निराकार होगा? साकार।

तो बाप कहते हैं- मुझे याद करो। कौन कहते हैं? कौन-सा बाप? (किसी ने कहा-शिवबाप) शिवबाप कहते हैं- मुझे याद करो, सिर्फ बिंदी बन जाओ, 5000 साल परमधाम में पड़े रहो? (किसी ने कहा-जिसमें प्रवेश करता है...) निराकार बाप को याद करेंगे तो निराकारी बाप से क्या मिलेगा- निराकारी धाम का वर्सा मिलेगा या साकारी धाम-सुखधाम का वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा- निराकारी धाम) तो 5000 साल निराकार दुनिया में रहना चाहते हैं? (किसी ने कहा- जिसमें प्रवेश करता है उसकी बात) तो बताया कि निराकार आ करके ज्ञान का वर्सा देते हैं और उस ज्ञान के आधार पर जो पहचान मिलती है, उस पहचान में मनुष्य-सृष्टि का जो बेहद का बाप है, जो नई दुनिया का भी बाप है, नई दुनिया में जो पहला पत्ता कृष्ण है, उसका भी बाप है और जब पुरानी दुनिया बनती है तो उसके लिए भी कहा जाता है- ''स्वर्ग की दुनिया मेरी है तो नरक की दुनिया मेरी नहीं है क्या?'' ''बाप की ही सारी दुनियाँ है, नई वा पुरानी। नई बाप की है, तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनियाँ भी मेरी ही है। सारी दुनियाँ का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनियाँ में राज्य नहीं करता हूँ; परंतु है तो मेरी ना।'' (मु.ता. 14.6.68 पृ.1 आदि) शिवबाप शान्ति, सुख या दुखधाम में बैठकर कहेंगे कि स्वर्ग की दुनिया मेरी है? नहीं। नरक की दुनिया मेरी है- ये तो कह ही नहीं सकते; क्योंकि नरक की दुनिया में तो सब पतित होते हैं और शिवबाप तो कभी पतित होता ही नहीं। तो कौन कहते हैं- मुझे याद करो? मामेकम् याद करो? वो कौन-सी आत्मा है जो कहती है- मुझे याद करो, मामेव नमस्कुरु? (किसी ने कुछ कहा-...) नारायण की आत्मा कहती है- मुझे याद करो? फिर तो सारा राज्य, नारायण के राज्य में जितनी भी प्रजा होगी, वो किसको याद करेगी? नारायण को याद करेगी ना! करती है? (किसी ने कहा- अच्छे-से-अच्छी याद नारायण को याद करना बोलते हैं ना बाबा!) वो अभी संगम में बताया कि इस बात को पहचानो कि नर से डायरैक्ट नारायण संगम में बना जाता है या सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में बना जाता है? (किसी ने कहा-संगम में) तो वो नारायण का परिचय दिया जो पुरुषार्थ करके नर से यहीं नारायण बनता है। ज्ञान तो बुद्धि में आ गया ना! बाप ने तो पहचान दे दी कि नारायण का जन्म कब हुआ? अरे! तुम्हें परिचय मिला कि नहीं? मिला। कब हुआ? 1976 में जन्म हुआ। तो जिनको परिचय मिल गया, जिन्होंने जान लिया कि वो नारायण वाली आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप को पहचान चुकी है। नारायण वाली आत्मा अपने आत्मा के पार्ट को पहचान चुकी है कि सृष्टि रूपी रंगमंच पर मेरा ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट क्या है। तो उस आत्मा को तुम बच्चे भी जान चुके हो। वो कहते हैं। तो संगमयुग में उनको नारायण तो नहीं कहेंगे। जो नई दुनिया का मालिक बन जाएगा, वो नारायण कहेंगे- मुझे याद करो? अभी कौन कहते हैं? शिवबाप कहते हैं- मुझे याद करो? या शिवबाबा कहते हैं- मुझे याद करो? माना शिवबाबा का वो रूप-स्वरूप क्या दिखाया है जिसको याद करो? (किसी ने कहा-साकार) तो त्रिमूर्ति में कौन-सा रूप है? यही वाणी कई दिनों से चल रही है।

त्रिमूर्ति के चित्र में कौन-सा चित्र है जिसको याद करना है? (किसी ने कहा- शंकर सम्पन्न स्टेज बनने पर) तो चित्र कौन-सा है- शंकर है, विष्णु है, ब्रह्मा है? कौन-सा चित्र है? अरे! लिंग-रूप है। वो जो लिंग-रूप ऊपर त्रिमूर्ति चित्र में दिखाया है ना! ब्रह्माकुमारियाँ भी जब प्रदर्शनी करती हैं तो क्या करती हैं? 32 किरणों वाला लिंग-रूप सामने रख देती हैं। अब बताओ,

गुण और अवगुण साकार में होंगे या निराकार में होंगे? (किसी ने कहा-साकार में) तो ब्रह्माकुमारियाँ 32 गुणों का भण्डार निराकार बिन्दु को समझती हैं या साकार को समझती हैं? निराकार को समझती हैं। ये तो गलत बात हो गई, निराकार तो 32 गुणों का भण्डार हो ही नहीं सकता। वो गुण-अवगुणों से परे है, निर्गुण है। वो सगुण है नारायण, जिसके अंदर अनेक प्रकार के गुण ही समाए हुए हैं, अवगुण एक भी नहीं हैं; इसलिए भक्तिमार्ग में उसकी कोई ग्लानि नहीं होती है। किसकी? नारायण की। तो वो नारायण इस समय वर्तमान रूप में पुरुषार्थी है या सम्पन्न है? (किसी ने कहा-पुरुषार्थी है) वो कहते हैं- मुझे याद करो। क्या कहते हैं? मन्मनाभव- मेरे मन में समा जा। शिव कहते हैं? (किसी ने कहा-नहीं) शिव को तो मन ही नहीं है। मन तो चंचल होता है। शिव अमन है कि संकल्प-विकल्प करने वाला है? वो तो अमन है, उसे संकल्प-विकल्प करने की दरकार है ही नहीं। वो तो ऑलरेडी त्रिकालदर्शी है। जो है ही त्रिकालदर्शी, वो किस बात का मनन-चिंतन-मंथन करेगा! जो अपने पूर्वजन्मों को नहीं जानता, आगे के जन्मों को नहीं जानता, भविष्य को नहीं जानता, वर्तमान को भी पूरा नहीं जानता, वो मनन-चिंतन-मंथन करेगा कि मेरी आत्मा का पार्ट क्या है। तो कौन कहता है- मामेकम् याद करो? साकार के द्वारा ये बात शिवबाप ने बोली। ब्रह्मा साकार, उसके द्वारा बोला। क्या बोला? मन्मना भव अर्थात् मेरे मन में समा जा। किसने बोला? निराकार ने? (किसी ने कहा- साकार ने) हाँ, जो ब्रह्मा नामधारी हैं वो शिव की वाणी में इंटरफियर करके बोलते हैं, चाहे वो दादा लेखराज ब्रह्मा हो और चाहे वो परम्ब्रह्म हो। ब्रह्मा अपूर्ण है या सम्पूर्ण है? (किसी ने कहा-अपूर्ण) अपूर्ण है तो ब्रह्मा है। तो वो इंटरफियर करके बोलता है। बच्चा है, बच्चा-बुद्धि है तो बाप की बातों के बीच में बोलगा कि नहीं बोलेगा? बोलेगा। तो वो एक ही रूप है जो सम्पन्न होने पर लिंग के रूप में शिव के मंदिरों में पूजा जाता है। वो आत्मा कहती है- मुझे याद करो; क्योंकि वो ही पतितों को पावन बनाने वाला है। तुम सब पार्वतियाँ हो। कौन बोला- ब्रह्मा की मूर्ति बोली, विष्णु की मूर्ति बोली, शंकर की मूर्ति बोली, कौन-सी मूर्ति बोली? शिवबाबा बोला। तो वो शिवबाबा का सम्पन्न रूप बोला या अधूरा रूप बोला? (किसी ने कहा-सम्पन्न रूप) अगर अधूरा रूप भी बोला कि मुझे याद करो तो ऊँचे ही बनेंगे या नीचे गिरेंगे? (किसी ने कहा-नीचे नहीं गिरेंगे) ऊँचे ही चढ़ेंगे।

तो बोला- वो एक ही रूप है जो संग के रंग से 'तुम सब पार्वतियों' को पावन बनाने वाला शिव के मंदिरों में दिखाया जाता है। संग का रंग लगा रहा है कि नहीं? कौन? संग का रंग शिवलिंग लगा रहा है या जलाधारी लगा रही है? ऊँचा कौन है? शिवलिंग है। तो बताया- वो ही पतित-पावन है, संग के रंग से पतितों को पावन बनाने वाला है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, ब्रह्मा आदि ये सब देहधारी पतितों को संग के रंग से पावन बनाने वाले नहीं हैं।

देखो, ये एक ही बात अच्छी है, इसको पक्का कर दो कि ऊँचे-ते-ऊँचा वो पतित-पावन भगवंत कौन है जिसकी दुनिया में यादगार-मंदिर सबसे जास्ती बनते हैं और दुनिया के देश-विदेशों की खुदाइयों में सबसे जास्ती मूर्तियाँ मिलती हैं। वो ही है ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत। और कोई भी जास्ती बात फ़ालतू मत करो। इधर-उधर की बातें करते रहते हो, सुनाते रहते हो, वो सब क्या है? फ़ालतू बात। नहीं, पहले ये बताओ, ये बात पक्की कराओ। उनके लिए ही कह देते हो- पतित-पावन। किनके लिए? कौन बोला? शिवबाप ने ब्रह्मा तन में बोला- उनके लिए ही कहते हो, मेरे लिए नहीं। (किसी ने कहा-भविष्य के लिए इशारा दिया) हाँ जी! उनके लिए ही कहते हो पतित-पावन, पतितों को पावन बनाने वाला। इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट पतितों को पावन बनाने वाले क्यों नहीं हो सकते, वो भी तो ग्रेट फादर्स हैं? क्योंकि वो भी संग के रंग में पतित बन जाते हैं। ये एक ही है जिसकी सार्वभौम पूजा होती है, मान्यता है शिवलिंग की। वो कहते हैं, क्या कहते हैं? कि मुझे याद करो। वो तुम कभी भी कृष्ण के लिए नहीं कहते हो कि कृष्ण कहते हैं- मुझे याद करो। तुम नहीं यह बात कहते हो। 'तुम' माने कौन- ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ या प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ? प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए बोला- तुम नहीं कहते हो कि पतित-पावन कृष्ण उर्फ ब्रह्मा है। कौन कहता है? ब्रह्माकुमारियाँ कहती हैं। पतित-पावन तुम नहीं कहते हो।

एक ही भगवान पतित-पावन है, बस। दो भगवान होते ही नहीं। बुलाते भी उनको ही हैं। किनको? पतित-पावन को

बुलाते हैं। किस नाम से बुलाते हैं? (किसी ने कहा-सीता-राम) हाँ, पतित-पावन सीताराम। हे पतित-पावन! आओ। जो पतित से पावन बनते हैं वो ही बुलाते हैं। जो दूसरे धर्म में कन्वर्ट होने वाली आत्माएँ या दूसरे धर्म वाले कोई भी पतित से पावन नहीं बनते हैं, वो बुलाते भी नहीं हैं। अभी संगमयुग में भी शूटिंग होती है कि नहीं? (किसी ने कहा- होती) तो बुलाने-करने की शूटिंग संगमयुग में भी होती है कि नहीं होती है? (किसी ने कहा- होती है) अनुभव करते हो? बुलाते हो कि नहीं बुलाते हो? (किसी ने कहा- बुलाते हैं) कि कोई-2 ब्रह्माकुमार-कुमारियों को बुलाते हो? ब्रह्मा को बुलाते हो? ब्रह्माकुमारियों की तरह गुलज़ार दादी में बुलाते हो? कोई प्रजापिता ब्रह्माकुमार को बुलाते हो? (किसी ने कहा-नहीं बाबा) नहीं बुलाते। किसको बुलाते हैं? जो मनुष्य-सृष्टि का, 500-700 करोड़ सृष्टि का बाप है, जो इस सृष्टि पर सदाकायम है, उसका पार्ट कभी इस सृष्टि पर ख़त्म होता ही नहीं, उसको तुम बुलाते हो- हे पतित-पावन! आओ। बाप माना ही वर्सा। या शिवबाप माने वर्सा? शिवबाप माने स्वर्ग का वर्सा? इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि की आत्माएँ, उनके फॉलोअर्स निराकार शिवबाप को याद करते हैं तो स्वर्ग का वर्सा पाते हैं? (किसी ने कहा-सबका नहीं) क्यों नहीं पाते? निराकार बाप को याद करते हैं। और तुम? तुम ऐसे साकार बाप को याद करते हो जिसकी आत्मा एकदम परिपक्व स्टेज में निराकारी स्टेज धारण करती है। अपने पुरुषार्थ से धारण करती है या उसका कोई बाप है देने वाला? पुरुषार्थ से धारण करती है। जो आत्माओं का बाप है वो सिर्फ ज्ञान देता है, वो योग की ताकत नहीं देता है। यह ज़रूर कहता है- तुम मुझे जितना याद करते हो, मेरी निराकारी ज्योतिबिन्दु को, मेरी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है; उस बिन्दी को तुम जितना याद करते हो उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ। "जब भी याद करते हो तो बाप हाजिर है ना।" (अ.वा.18.3.85 पृ.242 मध्यांत) तुम 24 घण्टे याद करो तो मैं 24 घण्टे तुम्हारे साथ रहूँगा, निराकारी स्टेज में ही रहूँगा।

ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त जो पतित-पावन है वो ही ऊँचे-ते-ऊँचा हमारा वर्सा है। बाप माने वर्सा। तो ऊँचे-ते-ऊँचा, ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा देगा। अच्छा! वो बाप कहाँ आते हैं? (किसी ने कहा-भारत में) भारत तो बहुत बड़ा है। दक्षिण भारत में आते हैं, नॉर्थ भारत में आते हैं- कहाँ आते हैं? अरे! भारत छोटा-मोटा है क्या? कहाँ आते हैं? (किसी ने कहा-फर्रुखाबाद में) फर्रुखाबाद में मालिक को बहुत मानते हैं। फर्रुखाबाद वालों से मुरली में पूछा- उनसे पूछो वो मालिक साकार है या निराकार? ''उनसे पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है वा साकार है? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके।'' (मु.ता.14.1.73 पृ.2 अंत) ज़रूर साकार है। तो जन्म कहाँ लेते हैं? (किसी ने कहा- भारत में जन्म लेते) भारत में तो जन्म लेते हैं, ऐसे थोड़े ही कहा- इस बच्चे ने कहाँ जन्म लिया? तो कहेंगे, भारत में जन्म लिया। इससे कोई मानेगा? एग्ज़ैक्ट स्थान बताओ ना कि बच्चे ने कहाँ जन्म लिया! ऐसे ही पूछा- जन्म कहाँ लेते हैं? कहेंगे, भारत में। तो भारत में आ करके वर्सा देते हैं ना! कि विदेश में आ करके स्वर्ग का, स्वर्ग की नई राजधानी का वर्सा देते हैं? 16 कला सम्पूर्ण राजधानी का वर्सा भारत में आ करके देते हैं कि विदेश में देते हैं? भारत में देते हैं। कौन-सा वर्सा देते हैं? अरे, ये बाप भारत को स्वर्ग बना देते हैं। स्वर्ग बनाने वाला खुद भी स्वस्थिति में लगातार स्थित होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? (किसी ने कहा- होना चाहिए) तो वो मनुष्य-सृष्टि का एक ही बेहद का बाप है, जो पुरुषार्थ करके लगातार ऐसी स्टेज बनाता है; कैसी स्टेज? निराकारी ज्योतिबिन्दु बाप शिव समान निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी स्टेज बनाता है; क्योंकि वो ही है हैविनली गॉडफादर। हैविनली गॉडफादर अर्थात् हैविन को बनाने वाला बाप। जैसे बाप मकान बनाता है, बच्चों को मकान का वर्सा देता है; जमीन-जायदाद बनाता है, जमीन-जायदाद देता है; करोड़ का वर्सा देता है, करोड़ पैदा करता है तभी तो देता है! नहीं? (किसी ने कहा-बाप सक्षम है) बाप खुद कमाता है तब देता है कि बिना कमाए देता है? कमाता है, बनाता है तो वर्सा देता है। तो ऐसे ही ये बाप हैविन बनाने वाला है। वो आत्माओं का बाप प्रैक्टिकल में हैविन बनाता है कि सिर्फ अपने दिलोदिमाग में हैविन का नक्शा देता है? (किसी ने कहा- नक्शा देता है) जिसकी यादगार है, ब्रह्माकुमारियाँ पहले अपने हर सेण्टर के दरवाज़े पर बड़ा बोर्ड टाँगती थीं- श्रीकृष्ण आ रहे हैं, तीरी पर बहिश्त ला रहे हैं। तीरी माने हथेली। हथेली रूपी बुद्धि जो है, उसमें स्वर्ग का वर्सा माना स्वर्ग का नक्शा आ जाता है कि कैसे नई दुनिया बनने वाली

है। तो कृष्ण को क्यों दिखाते हैं? कौन-से कृष्ण को दिखाते हैं भक्तिमार्ग में? (किसी ने कुछ कहा-...) वो तो गाते हैं- 'हे कृष्ण नारायण वासुदेव' अर्थात् 16 कला सतयुग के आदि में नारायण का राज्य था, वो बचपन में कृष्ण था। जो कृष्ण है वो ही नारायण है। वो सतयुगी नारायण को, कृष्ण को समझ लेते हैं। किसकी बात है? (किसी ने कहा-संगमयुगी नारायण) वास्तव में वो स्वर्ग के रचयिता की बात है। जो संगमयुगी कृष्ण है, जो बच्चा-बुद्धि कृष्ण से सालिम-बुद्धि नारायण बनता है; पहले बच्चा-बुद्धि नासमझ, फिर सालिम-बुद्धि बनता है। वो सालिम-बुद्धि बनने वाला ही स्वर्ग का रचयिता है। पहले उसकी बुद्धि में ही स्वर्ग का नक्शा आता है। कोई चीज़ बनती है, मकान बनता है तो इंजीनियर की बुद्धि में नक्शा आता है ना! नक्शा आता है बुद्धि में, फिर बाद में छोटा मॉडल बनाया जाता है। जैसे सन् 1947 कराची में स्वर्ग का मॉडल बनाया गया। प्रैक्टिकल तो नहीं बना। फिर सन् 1976 में लक्ष्मी-नारायण का जन्म हुआ। तो बच्चे के रूप में हुआ होगा या बड़े रूप में हुआ होगा? बच्चे के रूप में ही हुआ होगा। तो उस बच्चे की बुद्धि में भी सन् 1976 से स्वर्ग के वर्से का नक्शा, स्वर्ग का नक्शा आने लगता है, फिर परिपक्व स्टेज भी होती होगी, नक्शा कम्प्लीट भी बनता है। तब हैविनली गॉडफादर कहा जाता है, हैविन स्थापन करने वाला, नई दुनिया स्थापन करने वाला। नई दुनिया साकार है या निराकार? नई दुनिया साकार है। तो बनाने वाला साकार होगा। रचना साकार तो रचयिता भी साकार। शिव तो निराकार है। स्वर्ग की साकार दुनिया बनाता है? वो पुरुषार्थ करके बनाता है? नहीं। तो ज़रूर है- ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं। ब्रह्मा ने तो शरीर छोड़ दिया तो कैसे स्थापना करते हैं? (किसी ने कहा- ब्राह्मणी में प्रवेश करते) ब्राह्मणी में प्रवेश करते हैं; महाकाली में? महाकाली विनाश करती है कि स्थापना करती है? (किसी ने कहा- ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करते) माने ब्रह्मा की सोल शिवबाप को, उसके प्रैक्टिकल पार्ट को पहचानती है? (किसी ने कहा-नहीं पहचानती) पहचानती नहीं तो बुद्धि रूपी हथेली में नक्शा कहाँ से आ जाएगा! जो बाप को याद करने में सौ परसेण्ट तीखा जाएगा उसी की बुद्धि सूक्ष्म बनने के कारण, नई दुनिया का सम्पन्न नक्शा तैयार करेगी ना! कौन करेगा? शिवबाबा करेगा। शिवबाप नहीं करेगा; शिवबाबा करेगा, साकार-निराकार का मेल करेगा। शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश होता है। शंकर पुरुष है या स्त्री है? (किसी ने कहा-पुरुष है) पुरुष सब दुर्योधन-दुःशासन होते हैं। तो सबसे बड़ा दुर्योधन-दुःशासन कौन हुआ? अरे! पुरुषों में सबसे बड़ा देह-अभिमानी पुरुष कौन हुआ? अरे, हुआ अहं+दा+बादी कि नहीं? हुआ। वॉशरमेन का टाइटिल किसका है? शिवबाबा का है। तो बताया कि शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश होता है। पुराने सब कपड़े ख़लास कर देता है। पाँच तत्वों के सारे पुतले भस्म हो जाते हैं।

तो देखो, स्थापना भी होती है। 'भी' क्यों लगा दिया? विनाश भी होता है। यज्ञ के आदि में भी सन् 1936-37 में स्थापना के साथ-2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो जो विनाश ज्वाला है, उसको प्रज्वलित करने वाले कौन? ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे। ''विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने?'' (अ.वा. 3.2.74 पृ.13 अंत) तो दोनों काम साथ-2 होते हैं। देखो, स्थूल दुनिया का स्थूल विनाश स्थूल ऐटम बम्बों द्वारा होता है। हिस्ट्री कहती है कि सन् 1936-37 से पहले ऐटमिक एनर्जी का नाम-निशान नहीं था। सन् 1936-37 में जब सूक्ष्म रूप से ब्राह्मणों की सूक्ष्म दुनिया ऊँ मंडली का, छोटी-से-छोटी नई दुनिया की स्थापना का और पुरानी दुनिया के विनाश का 1936 से 47 तक नज़ारा ले करके गुप्त रूप में शिवबाप इस सृष्टि पर आता है तो उस समय इस दुनिया में ऐटमिक एनर्जी का भी निर्माण शुरू हुआ और पहला विस्फोट द्वितीय विश्वयुद्ध सन् 1945 में हुआ, हिरोशिमा भस्म हो गई। ब्राह्मणों की दुनिया में भी चैतन्य हिरोशमा- जो हीरों का संगठन था, वो 1942 से भस्म होने लगा। तो बताया- स्थापना भी साथ-2 होती है और विनाश भी साथ-2 होता है। "जितनी-2 स्थापना होती जाती है उतनी-2 विनाश की आग धीरे-2 बढ़ती जा रही है।" (मु.ता.28.10.72 पृ.3 मध्य) जितनी स्थापना उतना विनाश का साज़-सामान भी हो जाता है। पूरी नई राजधानी स्थापना हो जाएगी- 108 राजाएँ तैयार हो जाएँगे, बाप के गले की माला बन जाएँगे, तो क्या होगा? पूरा विनाश

भी शुरू हो जाएगा।

तो बरोबर स्थापना भी, विनाश भी, महाभारी महाभारत की लड़ाई के पीछे हैविन के गेट्स खुलते हैं। गेट वे टू हैविन इज़ महाभारत। महाभारी-महाभारत, जो माया का युद्ध है, अहिंसक युद्ध है; तुम बच्चे जब तक उस अहिंसक युद्ध से पसार नहीं होंगे तब तक तुम्हारे लिए स्वर्ग के गेट नहीं खुलेंगे। पहले अध्याय में अर्जुन क्या करता है- डरता है कि नहीं डरता है? (किसी ने कहा- डरता है) तो तुम सब अर्जुन हो। इस माया के युद्ध में- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के युद्ध में; जो देहभान की इन्द्रियों से कनेक्टेड है, उस युद्ध में प्रवेश करने से, सद्भाग्य का अर्जन करने वाला, ज्ञान का अर्जन करने वाला जो अर्जुन है, वो एक नहीं है, तुम सभी अर्जुन हो, पहले तो डरते हो। ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ बहुत डरपाते हैं। क्या डरपाते हैं? पहले से ही हो-हल्ला मचाते हैं- अरे, ये एडवांस पार्टी बड़ी पतित है। अरे! ब्रह्माकुमारियाँ खुद से पूछें- संन्यासी हो या गृहस्थी हो? प्रैक्टिकल में क्या हो? संन्यासी। तो संन्यासी डींग मारे कि हमने इन्द्रियों को जीता है। तो वो तो ऐसे ही बात हो गई, जैसे 10 साल जेल में रहने वाला बाहर निकले और चिल्लाए- मैंने 10 साल ब्रह्मचर्य का पालन किया! तो हँसी की बात है या गम्भीर बात है? ये तो हँसी-कुड़ी वाले जोकर की बात हो गई। वास्तव में जो संन्यासी हैं, वो कभी भी इन्द्रियजित् नहीं बन सकते। ये ब्रह्मा, इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, इनके फॉलोअर्स- सब संन्यासी हैं, प्रवृत्तिमार्ग के पक्के नहीं हैं- एक प्रवृत्ति तोड़ते हैं, दूसरी निभाते हैं; दूसरी तोड़ते हैं, तीसरी निभाते हैं; चौथी तोड़ते हैं, पाँचवीं निभाते हैं। तोड़ते ही रहते हैं, प्रायः करके निभाते नहीं हैं, अल्पकाल के लिए निभाते हैं। तो संन्यासी हुए या प्रवृत्तिमार्ग के पक्के हुए? संन्यासी। शिवबाबा तो बेहद प्रवृत्तिमार्ग का है। इतनी बड़ी बेहद की प्रवृत्ति है कि वो अपनी प्रवृत्ति में जिनको-2 अपनाता है, उनको कभी भाग जाने के लिए या धक्का दे करके निकालने का निमित्त नहीं बनता। बाबा कहते हैं- ''कभी भी कुछ भी हो जाए बाप नहीं निकालेंगे। बच्चे कहते हैं प्यार करो या ठुकराओ हम तेरे दर से नहीं निकलेंगे। बाप कहते हैं मैं ठुकराता कहाँ हूँ? मैं तो प्यार करता हूँ।'' (मु.ता.29.4.73 पृ.3 अंत) तो बाप जैसा होगा, बच्चे भी वैसे ही होंगे।

तो बताया कि तुम सब बच्चे इस महाभारी-महाभारत गृहयुद्ध; काहे का युद्ध? गृहयुद्ध। क्या मकान को गृह कहा जाता है? (किसी ने कहा- नहीं) ''न गृहम् गृहम् इति उच्यते, गृहणी गृहम् उच्यते।'' ये ईंटों का मकान कोई घर नहीं होता है। कोई भी संगठन, उसको घर-परिवार नहीं कहेंगे। किसको कहेंगे? ''गृहणी गृहम् उच्यते।'' जो घरवाली है, घर के बाल-बच्चों, परिवार को सम्भालने वाली है, वो ही घर है। तो इस घर-गृहस्थ की लड़ाई में जो हिम्मतवान बनते हैं, माया का युद्ध करते हैं; माया के युद्ध में पाँच विकार हैं, मुख्य विकार है काम-विकार, कामेन्द्रिय से कनेक्टेड, उस युद्ध में जो विजयी बनते हैं, कर्मेन्द्रियों से कर्म करते याद में रहकर विजयी बनते हैं, वो राजा बनेंगे। 'इन्द्रिय जीते जगतजीत', 'काम जीते जगतजीत'। संन्यासी हों या ब्रह्माकुमारियाँ, ये युद्ध करती हैं कि भाग खड़ी हुई? भाग खड़ी हुई।

तो देखो, जो इस लड़ाई के पीछे हैविन तैयार होता है, हैविन के गेट्स खुलते हैं और तुम बच्चियाँ निमित्त बनती हो स्वर्ग के गेट खोलने के लिए। पुरुष चोले के बच्चों ने क्या कसूर किया? स्वर्ग के गेट खोलने के निमित्त बच्चे क्यों नहीं बनते हैं? क्योंकि बच्चे सब पुरुषप्रकृति के हैं। पुरुष जो इस दुनिया में हैं, वो सब दुर्योधन-दुःशासन हैं। वो अपना दुर्योधन-दुःशासन का वर्सा नहीं छोड़ेंगे; इसलिए शिवबाबा किसको निमित्त बनाते हैं? कन्याओं-माताओं को स्वर्ग का गेट खोलने के निमित्त बनाते हैं, तब ये स्वर्ग के गेट खुलते हैं, पावन गेट खुलता है। ये जो पतित हैं, उस पावन देश में सब पावन बन जाते हैं। जो पावन राजधानी स्थापन होगी, उसमें पतित होंगे? (किसी ने कहा-नहीं) संगदोष-अन्नदोष वाले रहेंगे? कोई नहीं रहेंगे। तो एकदम चुटकी बजाते हो जाएगा या ये ड्रामा जूँ मिसल धीरे-2 चलता है? धीरे-2 पुरुषार्थ होता है। तो ये पहले से ही मुरलियों में बता दिया- ''हंस और बगुले इकट्ठे रह न सके।'' (मु.ता.19.11.72 पृ.1 आदि) तो कोई तो इन बातों पर ध्यान देते हैं और कोई एक कान से सुनकर दूसरे कान से (निकाल देते हैं), रोज़ सुनते हैं, रोज़ निकालते रहते हैं। तो आखिर स्थापना होगी या नहीं होगी? स्थापना

तो होगी। स्थापना होगी तो फिर पतितों का विनाश होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा-होगा) अनिश्चय-बुद्धि रूपी मौत आएगी या नहीं आएगी? (किसी ने कहा- आएगी) मौत लाने का मुखिया कौन है? जो महामृत्यु है, उस महामृत्यु लाने का मुखिया कौन है? शंकर है। शंकर के लिए गायन है-'शंकर द्वारा विनाश'। वो तो हद के विनाश की ही बात है और यहाँ तो ब्राह्मणों की दुनिया में बेहद के विनाश की बात है। पहले बीज-रूप आत्माओं की दुनिया में विनाश होगा या बाहर की दुनिया में विनाश होगा? (किसी ने कहा- पहले बीज-रूप आत्माओं की दुनिया में) ये बीज-रूप आत्माएँ जो हैं, रुद्रमाला के जो मणके हैं, अंदर ही ये विनाश सम्पन्न होता है। ये विनाश होता है, फिर बाद में स्वर्ग के गेट खुलते हैं। नवग्रहों के मुखिया अष्टदेव+महादेव का संगठन रूपी स्वर्ग पहले-2 छोटा होता है, तो विनाश भी छोटा होता है जो ब्राह्मणों की बीजरूप दुनिया में ही होता है। स्वर्ग का बड़ा नज़ारा सामने आएगा, साढ़े चार लाख मनुष्यात्माएँ, देवात्माएँ और उनके साढ़े चार लाख बच्चे- 9 लाख का संगठन जब बन जाएगा, सतयुगी दुनिया में, तो स्थापना पूरी कही जाएगी। सम्पन्न स्थापना हो गई।

तो अभी जो विनाश होना है, जिसके लिए 2017-18 की घोषणा की है, उसमें विनाश किनका होगा? संगदोष-अन्नदोष लेने वालों का होगा या संगदोष-अन्नदोष से बचने वालों का होगा? (किसी ने कहा-संगदोष-अन्नदोष में आने वालों का) तो स्थापना भी होती है, विनाश भी होता है, स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं, पावन देश भी बनता है। ये जो पतित हैं, कौन? किसकी तरफ़ इशारा किया? (किसी ने कहा- ब्रह्मा की तरफ़) अकेले ब्रह्मा की तरफ़? ब्रह्मा की गोद में खेलने वाले सब धर्म वालों की तरफ़ नहीं? सभी कुखवंशावली वालों की तरफ़ नहीं? सभी धर्म जो ब्रह्मा की गोद में खेलने वाले हैं, ब्रह्मा के मुख से पैदा होने वाले नहीं हैं, मुखवंशावली ब्राह्मण नहीं हैं, कुखवंशावली हैं। उन्हें गोद का नशा है- हमने ब्रह्मा बाबा की गोद ली है, तुम तो ज्ञान में आज आए हो, कल के बच्चे हो। देहभान का, गोद का बड़ा नशा रहता है।

तो बोला- पावन देश के गेट्स खुलते हैं, पावन हो जाते। तो पावन करने वाला पतित-पावन, पावन देश बनाएगा ना! कौन-सा देश बनाएगा? पावन देश बनाएगा ना! तो पावन देश में भारत में ही ये लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे ना! हम तो ठीक कहते हैं ना- भगवान बेहद का ऊँचे-ते-ऊँचा, उनसे भारत को अभी वर्सा मिल रहा है। किससे? भगवान से। धनवान से नहीं। धनवान माने धन वाला और भगवान माने भग वाला। भागवत में क्या गाया हुआ है? कितनी गोपियाँ थीं जिनसे भगवान के गुप्त सम्बंध जुड़े हुए थे? 16 हज़ार गोप-गोपियाँ। उनसे भारत को अभी वर्सा मिल रहा है। सर्वव्यापी-ये बात तो भूल है। भगवान सर्वव्यापी है या एकलिंग व्यापी है? एकलिंगव्यापी है। सब लिंगों में व्यापी नहीं है। वो एकलिंग जी महाराज है, जो भारत में प्राचीन काल से ही बहुत मान्यता प्राप्त है। उस बाप से वर्सा मिलता है।

तो मैं भारत को आ करके और जो भारत स्वर्ग से नरक बन गया है, फिर आ करके हम (शिव+शंकर) भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कौन बोला? शिवबाप बोला ब्रह्मा द्वारा। फिर आ करके हम भारत को क्या बनाते हैं? हम भारत को स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग माने स्व स्थिति में गया- ऐसा बनाते हैं। स्वर्ग बनाते हैं अर्थात् देवी-देवताओं का राज्य बनाते हैं अर्थात् वाइसलेस बनाते हैं या पवित्र गृहस्थ धर्म बनाते हैं। कैसा गृहस्थ धर्म? गृह+स्थ='गृह' माने गृहणी, 'स्थ' माने स्थिर रहने वाला। एक गृहणी में ही स्थिर रहने वाला बनाते हैं। पुरुषार्थी शंकर विषपायी दिखाते हैं। विष का अर्थ क्या है? अरे! विष किसको कहा जाता है? पुरुष अनेक स्त्रियों का संग करता है तो कहा जाता है- ये विषैला है, विषयी है, विकारी है और कृष्ण की दृष्टि राधा में डूबती थी, इन्द्रियाँ हैं ना, राधा की दृष्टि एक का संग करती थी; तो वो विषैले थे? विकारी थे? वो विकारी नहीं थे। तो देखो, सतयुग के आदि में, एकदम आदि में- पुरुषोत्तम संगम में, वो ना. क्या था? सत्वप्रधान। और कलियुग के अंत में आकर क्या बन जाता है? एकदम तमोप्रधान। जो सतयुग के आदि में एकदम निर्विषयी था, विषय-वासना से रहित था, विष्णु बन गया था, नो विष एट ऑल, वो ही तमोप्रधान बनने पर कलियुग के अंत में सबसे जास्ती विषपायी बन जाता है।

तो बोला, शिवबाबा ने बोला कि शिवबाप आ करके क्या करते हैं? भारत को पवित्र गृहस्थ धर्म वाला बनाते हैं। अभी

क्या है? अभी अपवित्र गृहस्थ धर्म वाला है। फिर क्या बना देते हैं? पवित्र गृहस्थ धर्म वाला बना देते हैं- लक्ष्मी-नारायण, वो ही उनका गृहस्थ धर्म है; क्योंकि आदि सनातन देवी-देवता धर्म जो था वो पवित्र था। सनातन माने सबसे पुराना। ब्रह्मा ने सृष्टि रची। उस सृष्टि में सबसे पुराना कौन? (किसी ने कहा- सूर्यवंशी) ब्रह्मा कोई सूर्य है क्या! ब्रह्मा ने जो सृष्टि रची, उसमें पहले-2 पुत्र का नाम, बड़े-ते-बड़े पुत्र का नाम, योगीश्वर/ज्ञानेश्वर का नाम, योगियों का ईश्वर/ज्ञानियों का ईश्वर, उसका नाम क्या दिया? सनत्कुमार। और सनत्कुमार से जिस धर्म की उत्पत्ति हुई, उसका नाम- सनातन धर्म। जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन धर्म, बुद्ध से बौद्ध धर्म, ऐसे ही सनत्कुमार से सनातन धर्म सृष्टि के आदि में तैयार हुआ; इसलिए इस धर्म का नाम 'आदि सनातन देवी-देवता धर्म' पड़ता है। पवित्र गृहस्थ धर्म आश्रम और अभी है अपवित्र गृहस्थ आश्रम।

तो दुनिया वालों में और जो अपवित्र गृहस्थ आश्रम है विषपायी शंकर का, उसमें अंतर क्या हुआ? अरे! दुनिया वाले भी वो ही व्यभिचारी कर्म करते हैं। निज़ाम बादशाह को 500 रानियाँ थीं। विषयी था? बड़ा विकारी था। ये उसका भी बाप है। बाप माने ज़्यादा ताकत वाला या कम ताकत वाला? ज़्यादा ताकत वाला। तो उसमें या जो भी दुनियाँ के व्यभिचारी बनने वाले बच्चे हैं, उन बच्चों में और इस विषय-विकारी विष पीने वाले शंकर में और उसके परिवार में अंतर क्या है? (किसी ने कहा- शंकर याद की प्रैक्टिस करते) याद तुम बच्चे नहीं करते हो? (किसी ने कहा- इतना फोर्स से याद नहीं कर रहे) इसका क्या प्रूफ कि आप नहीं याद करते हो और वो याद करता है? (किसी ने कहा- शंकर में शिव प्रवेश है ना बाबा!) शिव प्रवेश हो करके क्या ये कहता है कि तुम मुझे सबसे जास्ती याद करो तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा? (किसी ने कहा-शिव के साथ शंकर का नाम जोड़ा जाता है ना!) वो बाद में जोड़ा जाता है, जब शिव समान बन जाता है; अभी नहीं। अभी बन गया? (किसी ने कहा- शिवलिंग प्रूफ है ना!) अभी समान बन गया? (किसी ने कहा-अभी नहीं) तो अभी क्यों कहा? अभी की बात करो, भविष्य की बात बाद में करना। अभी शिव समान बन गया? नहीं बन गया। अभी भी तो उसका गायन, उसके जो चित्र मिलते हैं, विषपायी के मिलते हैं ना! तो वो जो सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप है, वो भी विषपायी दिखाया गया और विष कहा जाता है पराई स्त्री, पराए पुरुष के भोग करने को। तो उन भोगी मनुष्यों में, भोगी आत्माओं में शंकर सबका बाप है, सबसे जास्ती पावरफुल है। उस बाप में और उसके 500-700 करोड़ बच्चों में अभी अंतर क्या है? (किसी ने कहा- शंकर इन्द्रियजित् है) अरे, वो तो बाद में इन्द्रिय को जीतेगा। आप बाद की बात क्यों करते हो? अभी वर्तमान की बात करो ना! (किसी ने कहा-शंकर में विष पीने वाला शिव है ना!) शिव विष पीता है? शिव अमृतपायी नहीं है? शिव जो है, अमृत जो मंथन करने से बनता है, वो मंथन करने वाला नहीं है? अरे! शिव मंथन करने वाला है या नहीं है? (किसी ने कहा-शिव तो मंथन नहीं करता) तो जब मंथन ही नहीं करता तो निकलेगा कहाँ से? अपनी घोंट तो नशा चढ़े। शिव को तो घोंटने की दरकार है ही नहीं। तो इसलिए ब्रह्मा जीवित थे तब मुरली में बोला- अभी तुम बच्चे ज्ञान-अमृत नहीं कहेंगे। ''हमारा बाबा तो गीता ही सुनाते हैं। .... ज्ञानामृत भी नहीं कह सकते हैं। गीता को ज्ञानामृत कहना भी राँग है।'' (रिवाइज़ मु.ता. 13.3.75 पृ.2 आदि) क्यों? क्योंकि उस समय मनन-चिंतन-मंथन होता ही नहीं था। ज्ञान-सागर जो पृथ्वी/धरणी माता से लिपट कर रहता है, प्रवृत्ति है ना, उस सागर का बच्चों को ज्ञान ही नहीं था। अभी भी जो अपने को अम्माकुमार-कुमारी कहते हैं, उनको बाप का ज्ञान है ही नहीं, तो मंथन कहाँ से करेंगे! सागर-मंथन करेंगे? नहीं करते। और शिव भी सागर-मंथन करता है? नहीं करता है। तो जो नं. वार सागर-मंथन करेंगे वो अमृत-रस पिएँगे और सच्चाई से करेंगे। कैसी सच्चाई? आज्ञाकारी, वफ़ादार, फ़रमानबरदार, ईमानदार। ऐसे बाप के बच्चे बनेंगे तो उनको अमृत-रस मिलेगा। अमृत-रस बनता ही है मंथन करने से। तो मंथन करने में अव्वल नम्बर हिस्सा किसका है? (किसी ने कहा- प्रजापिता का) नहीं, चित्रों में क्या दिखाया है? जो यादगार चित्र बने हैं, उनमें क्या दिखाया है? सागर-मंथन के चित्र हैं कि नहीं? सागर-मंथन का चित्र तो है। उसमें क्या दिखाया है? अरे! असुर भी दिखाए हैं, देवताएँ भी दिखाए हैं और क्या दिखाया? कछुआ दिखाया, मेरु पर्वत दिखाया और सर्प दिखाया। सबसे जास्ती मेहनत कौन करता है? (किसी ने कहा-सर्प) हाँ, सबसे जास्ती पुरुषार्थ में खींचतान

सर्प की होती है। उस सर्प को देवताएँ भी अपनी ओर खींचते हैं, आकर्षित करते हैं कि यह हमारी पाला में आ जाए और असुर भी उसको आकर्षित करते हैं। तो उसकी खींचतान हो जाती है, दोनों तरफ़ से- दाएँ से भी, बाएँ से भी। तो उसका गुरिया-2 टूटेगा या नहीं टूटेगा? टूटेगा। तो बताया- वो जो गले में पड़ा वासुकि नाग ब्रह्मा सर्प है, सागर-मंथन जब तक सम्पन्न न हो और अंत में ज्ञान-अमृत का भरा कलश संसार में प्रत्यक्ष न हो जाए कि ये ज्ञान दुनिया का सबसे ऊँचा ज्ञान है, तब तक वो सर्प विषपायी है या अमृतपायी है? (किसी ने कहा-विषपायी) अमृत है ही नहीं तो अमृतपायी कैसे बनेगा? अमृत अंत में निकलता है या पहले ही निकलता है या बीच में निकलता है? अंत में निकलता है। तो अभी मंथन हो रहा है या हो चुका? हो रहा है। हो रहा है माना सबसे जास्ती खींचातान किसकी हो रही है पुरुषार्थ में? उसी सर्प की हो रही है। दुनिया में सर्प सबसे जास्ती कामी माना जाता है। बंदरों को सब विकारों में सबसे बड़ा मानते हैं- कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी; लेकिन काम-विकार के मामले में सबसे जास्ती कामी सर्प माना जाता है। उनमें भी सबसे बड़ा 'शेषनाग कहो या वासुकि नाग'। वसु का पुत्र वासुकि। वसुदेव का पुत्र वासुदेव। कौन? कृष्ण। उन्होंने कृष्ण सतयुग वाला समझ लिया, है संगमयुग का कृष्ण। तो बताया कि जो वासुकि नाग है, वो शंकर के गले में लगा हुआ ख़ास दिखाया जाता है। ऐसे तो कमर में भी है, बाँहों में भी है, सर में भी है; लेकिन खास गले में पड़ा हुआ है। गले में क्यों पड़ा हुआ है? गला किस बात की यादगार है? अरे, काम, क्रोध, लोभ और खास मोह की फाँसी लगी हुई है। अरे, शंकर जगत्पिता है तो उसको किस बात का मोह? बच्चों का मोह। मनुष्य-सृष्टि में कितने बच्चे हैं? 500-700 करोड़। 500-700 करोड़ बच्चों का कल्याण हो जाए। बाप क्या चाहता है? सब बच्चों का कल्याण हो या एक का हो, कोई का हो, कोई का न हो, क्या चाहता है? सबका कल्याण चाहता है ना!

तो अब पता तो लग गया- सबका कल्याण संग के रंग से ही होगा या अपने-आप होगा? संग के रंग से होगा। किसके संग के रंग से होगा? इतनी बड़ी दुनिया में इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, ब्रह्मा, छोटे-मोटे धर्मपिताएँ, उनके संग के रंग से कल्याण होगा या कोई ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है? धनवन्त नहीं, भगवंत, उसके संग के रंग से कल्याण होगा। भगवंत जो ऊँचे-ते-ऊँचा है, वो भगवंत क्या कामेन्द्रिय के संग के संग से ही पावन बनाता है कि दृष्टि के संग के रंग से पावन बनाता है? सबसे जास्ती संग का रंग कौन-से अंग का लगता है? आँखों का लगता है। तो वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत की भी ज्ञानेन्द्रियाँ हैं श्रेष्ठ इन्द्रियाँ और उन ज्ञानेन्द्रियों में भी सबसे श्रेष्ठ इंद्री है 'आँख'। वो शिव बाप भी कहते हैं- तुम बच्चे मेरी आँखों के नूर हो। ''बच्चे बहुत ही प्यारे होते हैं। तो कहते हैं तुम तो जैसे नयनों के नूर हो।'' (मु.ता. 8.5.68 पृ.3 आदि) कौन बच्चे? राम और कृष्ण। शिवबाबा किनकी आँखों का लोन लेकर आए हैं? राम और कृष्ण की आँखों का लोन लेकर आए हैं। सब बच्चों को देखते हैं, जानते हैं- कौन बच्चा क्या पुरुषार्थ कर रहा है। तो देखो, बाप की नज़र एक बच्चे पर जाती है, जो सबसे जास्ती बाप को याद करने का पुरुषार्थी है। वो बच्चा बाप का सबसे जास्ती संग का रंग ले सकता है। वो ही सबसे जास्ती संग का रंग क्यों ले सकता है, और बच्चे क्यों नहीं ले सकते? अरे, जल्दी बोलो। (किसी ने कहा-राजसी वंश का संस्कार है, उस आत्मा में ज्ञान-सूर्य बाप का संग का रंग का संस्कार है।) नहीं, वो बाप का बड़ा बच्चा है। कल्प-कल्पांतर का शिवबाप का वो आत्मा ऐसा बच्चा है जो निराकारी बाप का बड़ा बच्चा है। बड़ा बच्चा ज़्यादा ज़िम्मेवार होता है या छोटे-मोटे बच्चे बड़े ज़िम्मेवार होते हैं? (किसी ने कहा- बड़ा बच्चा)

तो अभी बोला- जिसके मत्थे मामला। नई दुनिया की स्थापना का और पुरानी दुनिया के विनाश का मामला किसके मत्थे मड़ा हुआ है? (किसी ने कुछ कहा-...) ब्रह्मा के मत्थे? ब्रह्मा मौजूद है? (किसी ने कहा- नहीं) मौजूद ही नहीं, तो उसके ऊपर ज़िम्मेवारी काहे की! (किसी ने कहा-परम्ब्रह्म) हाँ! ब्रह्मा नामधारियों में, जिनमें मैं प्रवेश करता हूँ, उनका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ। ''अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) तो पहले-2 किसमें प्रवेश किया? परम्ब्रह्म में प्रवेश किया। तो वो परम्ब्रह्म की ज़िम्मेवारी है। वो बड़े-ते-बड़ा ब्रह्मा भी है और उसके अंदर भी ऊँच-ते-ऊँच बाप है, जिस बाप का कोई बाप नहीं। प्रजापिता स्वयं भी सब धर्मपिताओं का बाप है। वो धर्मपिताएँ देह-अभिमानी हैं। उन देह-

अभिमानी बापों को, धर्मपिताओं को कौन वर्सा देता है? देहभान का वर्सा, हिंसा का वर्सा कौन देता है? साकार सृष्टि का साकार बाप ही देता है। तो जो इस साकार सृष्टि का साकार बाप है, उसकी ज़िम्मेवारी है, माता के रूप में स्थापना की भी ज़िम्मेवारी है- परिवार को बनाने की भी ज़िम्मेवारी है, निर्माण करने की भी ज़िम्मेवारी है और पुरानी दुनिया का विनाश करने की भी ज़िम्मेवारी है। ''धर्मसंस्थापनार्थाय'' (गीता 4/8)-सत्य धर्म की स्थापना के लिए और फिर ''विनाशाय च दुष्कृताम्''-जो देह-अभिमानी धर्मपिताओं के द्वारा स्थापन किए हुए दुष्ट धर्म हैं, चाहे वो ब्रह्मा हो, चाहे वो इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट कोई भी हों, उन सबके धर्मों का विनाश, उन सबके धर्मों में चलते हुए राज्यों का विनाश, राजधानियों का विनाश, धर्मखंडों का विनाश- ये उस बाप की ज़िम्मेवारी है। तब ही सत् धर्म की पालना और असत् धर्मों का विनाश। तो उसके मत्थे मामला।

मुरली में बोला ना- किसके मत्थे मामला, किसकी ज़िम्मेवारी? जो अपनी ज़िम्मेवारी को जानेगा, उसके ऊपर ज़िम्मेवारी या जो अज्ञानी है, उसके ऊपर ज़िम्मेवारी? जिसको ये ज्ञान है- ''स्वर्ग की दुनिया मेरी है तो नरक की दुनिया मेरी नहीं है क्या?'' ''बाप की ही सारी दुनियाँ है, नई वा पुरानी। नई दुनिया बाप की है, तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनियाँ भी मेरी ही है। सारी दुनियाँ का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनियाँ में राज्य नहीं करता हूँ; परंतु है तो मेरी ना।'' (मु.ता. 15.6.74 पृ.1 आदि) स्वर्ग के देवताएँ मेरे बच्चे हैं तो नरक की दुनिया के जो मानवीय या राक्षसी बच्चे हैं, वो मेरे बच्चे नहीं हैं क्या? इसलिए भक्तिमार्ग में एक ही देवता शंकर है जिसको देवताएँ भी मानते हैं और असुर भी मानते हैं। तो वो कहता है- मामेकम् याद करो। पुरुषार्थी रूप में ये बात नहीं है- मुझे याद करो। मेरे सम्पन्न रूप को याद करो। जो सम्पन्न रूप आत्मिक स्थिति में भी सम्पन्न है और साकारी स्थिति में भी सबका बाप है। जैसे परिवार में, परिवार जनों से पूछा जाए- तुम्हारा बाप कौन है? तुम किससे पैदा हुए? छोटे बच्चे होंगे तो कहेंगे- हमने माँ से जन्म लिया। अरे, माँ जन्मदात्री है? माँ में भी बच्चा कहाँ से आया? अपने-आप आ गया? कहीं से आया ना! तो जो बीज बोने वाला है, वो ही बाप है। ऐसे ही इस मनुष्य-सृष्टि में मनुष्य-सृष्टि का बाप कौन है, जिससे ये सारी मनुष्य-सृष्टि निकलती है और महामृत्यु के टाइम पर सारी सृष्टि जो गीता में बोला ''अव्यक्तमूर्तिना'' (9/4), उसमें समा जाती है? झाड़ के चित्र के ऊपर बैठा हुआ है। सभी मनुष्य-आत्माएँ अपने पंचतत्वों के शरीर को, विनाशी शरीर को, पंच तत्वों को छोड़ करके उसी लिंग-रूप में समा जाती हैं, जो विनाश काल में सर्व आत्माओं को नं. वार आकर्षण करते हुए दिखाया गया है। उसी से सारी सृष्टि निकलती है और कल्प के अंत में उसी में सारी सृष्टि समा जाती है। ओम् शांति।